NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

मौनवंशों का निरीक्षण

मंगला राम बाजिया और संतोष कुमार यादव

परिचयः-

आधुनिक मधुमक्खी पालन में मौनवंशों का निरीक्षण एक आवश्यक पहलू है। मौनवंशों का निरीक्षण उनकी स्थिति एवं आवश्यकताओं को जानने के उद्देश्य से किया जाता है मौनवंश को खोलने के पश्चात् निम्नलिखित जानकारी के लिए मौनवंश निरीक्षण का रिकार्ड लिया जाता है ;तालिका : 6द्ध।

- प्रत्येक मौनवंश के पास कम से कम 5 किलोग्राम भोजन भंडार होना चाहिए अन्यथा कृत्रिम भोजन देना चाहिए।
- मौनवंश में रानी मधुमक्खी की उपस्थिति जांचना। यदि रानी मधुमक्खी उपस्थित है तो क्या सही ढंग से अण्डें दे रही है या मौनवंश को नई रानी मधुमक्खी की आवश्यकता है?
- मौनवंश में बीमारियों व शत्राुओं का प्रकोप।
- मौनवंश में अतिरिक्त चौखटों की आवश्यकता।
- मौनवंशों का निरीक्षण केवल आवश्यकता पड़ने पर ही किया जाता है तथा बिना कारण इन्हें नहीं खोला जाता है।

मौनवंश के निरीक्षण के समय सावधनियां

- निरीक्षण के समय काले या गहरे रंग के कपड़े न पहनें क्योंकि मधुमक्खियाँ काले रंग पर अध्कि आक्रमण करती हैं।
- निरीक्षण से पहले किसी खुशबूदार पदार्थ या तेल का प्रयोग न करें।

मंगला राम बाजिया और संतोष कुमार यादव
विकास क्षेत्र
कृषि विकास सहकारी समिति लिमिटेड, 790, चरण V, उद्योग विहार, सेक्टर 19, गुरुग्राम, हरियाणा

- मौनवंश खोलने से पहले मुखरक्षक जाली पहन लें।
- मौनवंश का निरीक्षण तेज हवा, ठंडे मौसम या ऐसे समय न करें जब मधुमक्खियाँ बाहर कार्य न कर रही हों।
- मौनवंश खोलते समय डरें नहीं बल्कि विश्वास से उसे खोलें। चौखटों को झटका न दें।
- मौनवंश में चौखटें निकालते या रखते समय यह ध्यान रखें कि कोई मधुमक्खी कुचली न जाए।
- यदि मधुमक्खी डंक मार दे तो घबरायें नही बल्कि डंक को खुरच कर निकाल दें व उस स्थान पर थोड़ी हरी घास मल दें।
- निरीक्षण करते समय रानी का विशेष ध्यान रखें व गलती से उसे कोई नुकसान न पहुंचाएं।

मौनवंश के निरीक्षण की विधि

चरण 1: मधुमक्खी के निरीक्षण से पहले मुखरक्षक जाली पहन लें व हाइव टूल अपने साथ रखें। ऊपर बताई गई सभी सावधनियां बरतें।

चरण 2: मौनवंश खोलने के लिए मौनवंश के एक तरफ खड़े हों। मौनवंश के प्रवेश द्वार के सामने खड़े न हों।

चरण 3: मौनवंश के ऊपरी व अन्दर के ढक्कन को उतारने के बाद चौखटों पर रखे बोरी के कपड़े को हटाएं।

चरण 4: मौनवंश को धुंआकर से शांत करें।

चरण 5: मौनवंश की शक्ति देखें। इसके लिए जितनी चौखटें मधुमक्खियों से ढकी हों उन्हें गिनें।

चरण 6: हाइव टूल के प्रयोग से मौनवंश में चौखटों को एक तरफ से हटाएं।

चरण 7: चौखट में उपस्थित मकरंद, शहद, पराग व शिशुओं का विवरण लिख लें।

चरण 8: चौखट को बिना झटके के मौनगृह में वापिस रख दें। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि इस क्रिया में कोई मधुमक्खी न कुचली जाए।

चरण 9: इसी प्रकार एक–एक कर सभी चौखटों का निरीक्षण करें। रानी मधुमक्खी प्रायः शिशुओं वाली चौखट में मौनवंश के भीतरी भाग में होती है। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि रानी मधुमक्खी को कोई नुकसान न हो।

तालिका 6 : मौनवंश निरीक्षण का रिकॉर्ड

क्र. संख्या	मौनगृह की संख्या	कुल चौखटों की संख्या	मौनवंश वाली चौखटों की संख्या	भंडारित शहद/पराग			रानी मधुमक्खी			कमेरी ब्रूड		ड्रोन ब्रूड		किसी रोग की उपस्थिति	किसी प्राकृतिक शत्रु की उपस्थिति	टिप्पणियां
				मकरंद	मोम बंद शहद	पराग	नई रानी मधुमक्खी	पुरानी रानी मधुमक्खी	रानी रहित मौनवंश	मोम बंद कमेरी ब्रूड	खुला कमेरी ब्रूड	मोम बंद ड्रोन ब्रूड	खुला ड्रोन ब्रूड			

उत्कृष्ट = +++, मध्यम = ++

कम = + शून्य = –

चरण 10: चौखटों को मौनवंश में वापिस रखते समय चौखटों के मध्य मौनान्तर बनाए रखें।

चरण 11: निरीक्षण के पश्चात् मौनवंश को एक बार फिर बोरी से, अन्दर व बाहरी ढक्कन से ढक दें।

मधुमक्खीपालन के मौलिक सिद्धांत

मधुमक्खी पालन का अभिप्राय स्वस्थ व उत्पादक मौनवंश रखने के साथ–साथ मौन उत्पादों का सुरक्षित उत्पादन व रखरखाव है। मधुमक्खीपालन एकीकृत गतिविधि है। सफल मधुमक्खीपालन के किसी भी कार्य को वर्तमान

के साथ–साथ पूरे वर्ष के प्रबन्ध्न को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए।

स्वस्थ एवं उत्पादक मधुमक्खियाँ

स्वस्थ एवं उत्पादक मधुमक्खियाँ ही सफल मधुमक्खीपालन का आधर हैं। अतः मौनवंशों को स्वस्थ रखने व उत्पादक बनाने के लिए मधुमक्खीपालक को मौनवंश में उपस्थित रानी मधुमक्खी, कमेरी व नर मधुमक्खियों की स्थिति पूरी तरह से समझने की आवश्यकता होती है। मधुमक्खीपालकों को मौनगृह में पाली जाने वाली मधुमक्खियों ;देसी व विदेशी मधुमक्खीद्ध के साथ–साथ उनकी कार्यक्षमता के विभिन्न मानकों की जानकारी भी होनी चाहिए। इसके साथ मधुमक्खीपालक का मौनवंशों के सामान्य व विशेष प्रबन्ध्न में कुशल होना भी अति आवश्यक है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें:

कुशल प्रबन्ध्न

- युवा व अध्कि अण्डें देने वाली रानी मधुमक्खी वाले सशक्त मौनवंश रखें।
- आवश्यकतानुसार मौनवंशों को समय–समय पर खुराक दें।
- मौनवंशों में कम से कम पाँच किलोग्राम प्रति मौनवंश के हिसाब से शहद का भंडारण हो।
- मौनवंशों की अनुमोदित संख्या को ही एक स्थान पर रखें। एक मौनालय में 60–80 मौनवंशों को रखें व विभिन्न मौनालयों में 2–3 किलोमीटर दूरी अवश्य रखें।
- मौनालय के हर एक मौनवंश का लेखा जोखा रखें।

मौनालय की स्थापना

- केवल स्वस्थ मधुमक्खियाँ ही खरीदें।
- कमजोर मौनवंश का स्वास्थ्य सुनिश्चित् करने के पश्चात् ही उसे सशक्त मौनवंश के साथ मिलायें।
- घरछूट की पकड़ी गई मधुमक्खियों के मौनवंश को मौनालय में स्थापित करने से पहले सुनिश्चित करें कि मधुमक्खियाँ रोगग्रस्त न हों।

सामान्य प्रबन्ध्न

- मौनालय को साफ सुथरा रखें।
- मौनालय में साफ पानी का विशेष प्रबन्ध् करें।
- कभी भी रोगग्रस्त छत्तों को प्रयोग में न लायें।
- एकत्रित किए गए प्रोपोलिस व मोम के छत्ते इत्यादि को कभी भी मौनालय

में न फेंकें बल्कि उन्हें किसी पात्रा में एकत्रित करें।

- मौनगृहों को मौनालय में इस प्रकार रखें कि मधुमक्खियाँ दूसरे मौनगृह में न जाएं।
- रोग प्रबन्ध्न का विशेष ध्यान रखें।
- रोग व अन्य मौनवंशों की समस्याओं का सक्रिय दृष्टिकोण द्वारा प्रबन्ध्न करें।
- मौनवंशों में विभिन्न प्रकार के रोगों, माइट व अन्य समस्याओं की पहचान अपने आप न करें तथा प्रमाणिक ड्डोत से पहचान करवाने के पश्चात् ही उनकी रोकथाम के उपाय अपनायें।

मधुमक्खीपालक सुरक्षा

मधुमक्खीपालक को मौनवंशों के निरीक्षण अथवा प्रबन्ध्न के समय सुरक्षात्मक पोशाक, मुखरक्षक जाली व दस्ताने द्वारा अपनी सुरक्षा का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

उत्पाद की गुणवत्ता

मौन उत्पादों की गुणवत्ता का उत्पादन के समय से ही विशेष ध्यान रखना पड़ता है। हमारे मधुमक्खीपालक मुख्य रूप से मधुमक्खीपालन शहद उत्पादन के लिए कर रहे हैं इसलिए यहां पर शहद की गुणवत्ता से सम्बन्धित जानकारी दी गई है:

- सही अवस्था में शहद निष्कासन क्रिया का इसकी गुणवत्ता व उत्पादकता पर सीध प्रभाव पड़ता है। यदि शहद को पकने से पहले अथवा शहद से भरे कोष्ठों के बंद होने से पहले निष्कासित किया जाये तो इसमें पानी की मात्राा अध्कि होने के कारण शहद में उफान से सड़न हो जाती है। फलस्वरूप शहद प्रयोग करने के लिए उपयुक्त नहीं रहता है। शहद परिपक्व होने के पश्चात् भी निष्कासन न किया जाए तो शहद गहरे रंग का हो जाता है तथा छत्ते में भंडारण के लिए स्थान की कमी होने के कारण मधुमक्खियाँ कम शहद एकत्रित करती हैं।
- रंग से शहद गुणवत्ता पर कोई असर नहीं पड़ता किन्तु हल्के रंग को बाजार में प्राथमिकता दी जाती है।
- निष्कासित शहद में 20 प्रतिशत से कम नमी होनी चाहिए।
- हमेशा साफ सुथरे उपकरण व सुरक्षित खाद्य पात्रा प्रयोग में लाएं।